सोनिया की मुर्गियां

फीबी वहल, हिंदी: विदूषक

04-12

सोनिया की मुर्गियां

फीबी वहल, हिंदी: विदूषक

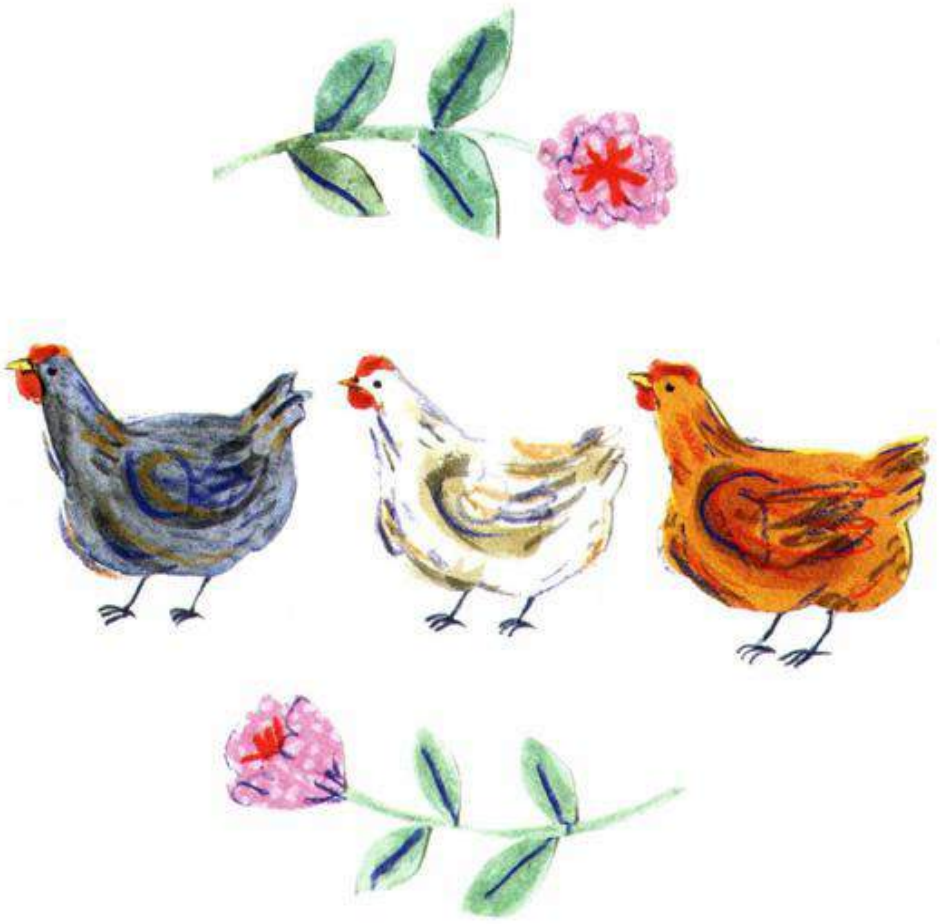

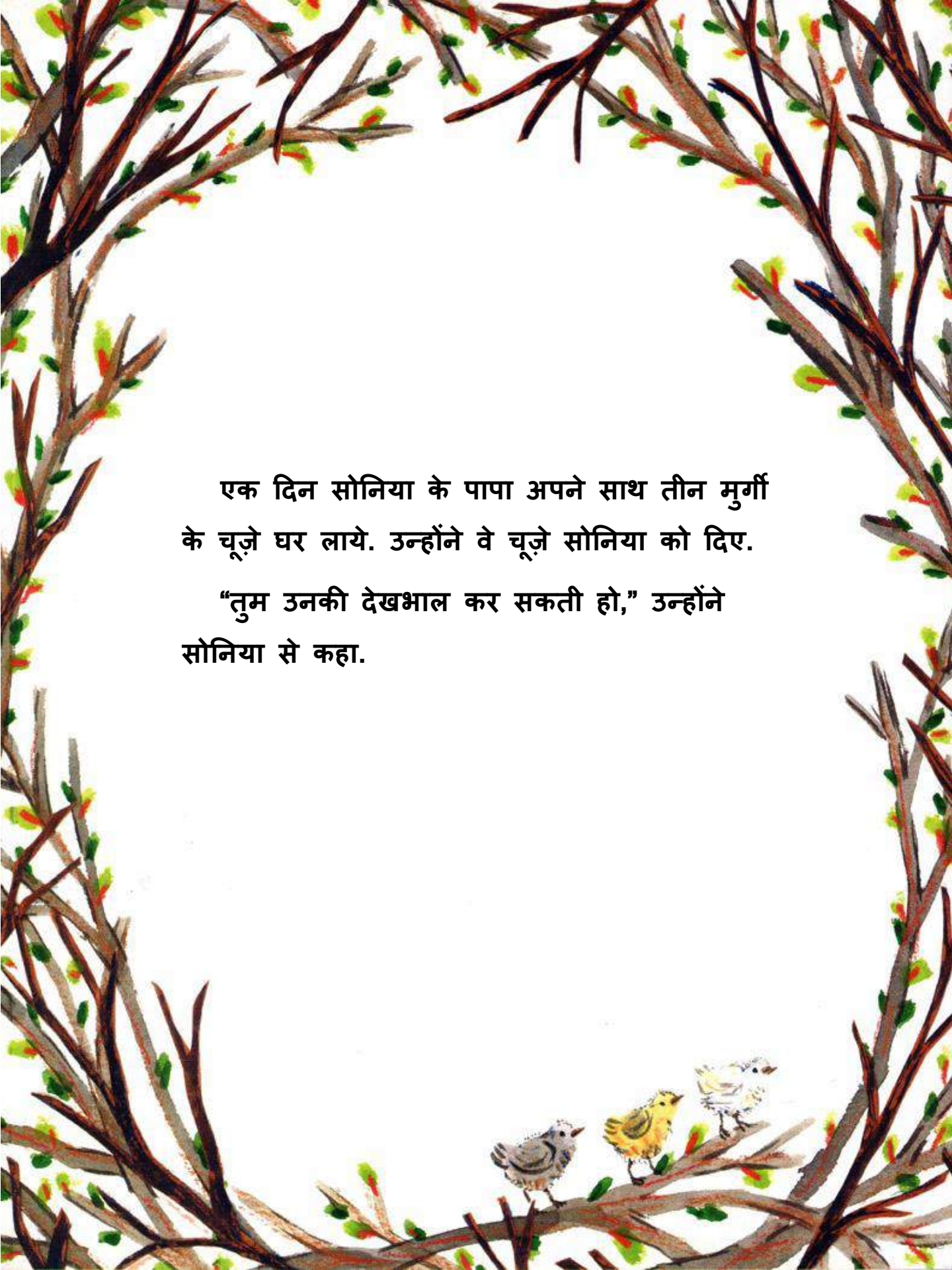

एक दिन सोनिया के पापा अपने साथ तीन मुर्गी के चूज़े घर लाये. उन्होंने वे चूज़े सोनिया को दिए.

“तुम उनकी देखभाल कर सकती हो,” उन्होंने सोनिया से कहा.

फिर सोनिया और माँ ने मिलकर मुर्गियों के पुराने दबड़े को दुरुस्त किया. तब तक तीनों चूज़े एक गत्ते के डिब्बे में रहे. सोनिया ने चूज़ों की बहुत अच्छी देखभाल की. उन्हें गर्म रखने के लिए वो उन्हें अपने स्वेटर में छिपा कर रखती.

"मैं तुम्हारी माँ हूँ," वो चूज़ों से कहती.

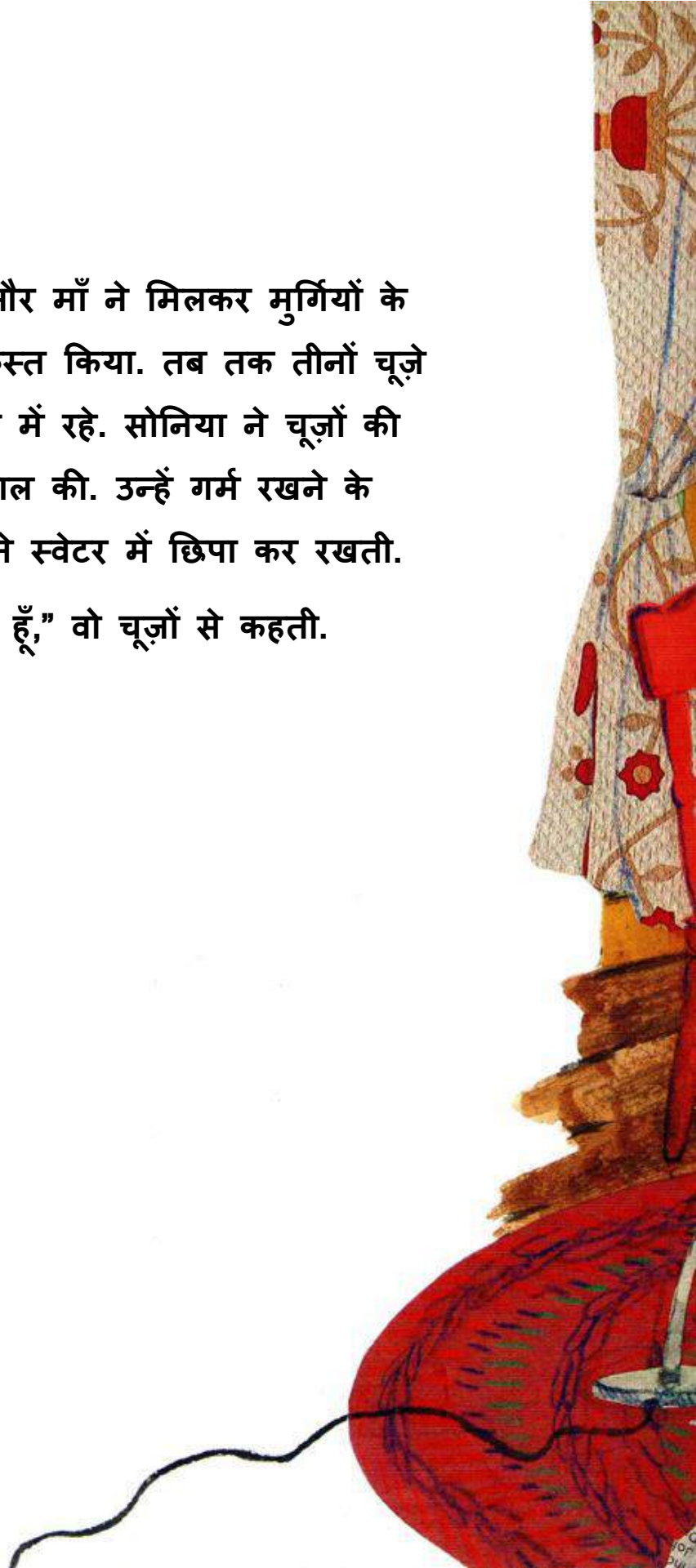

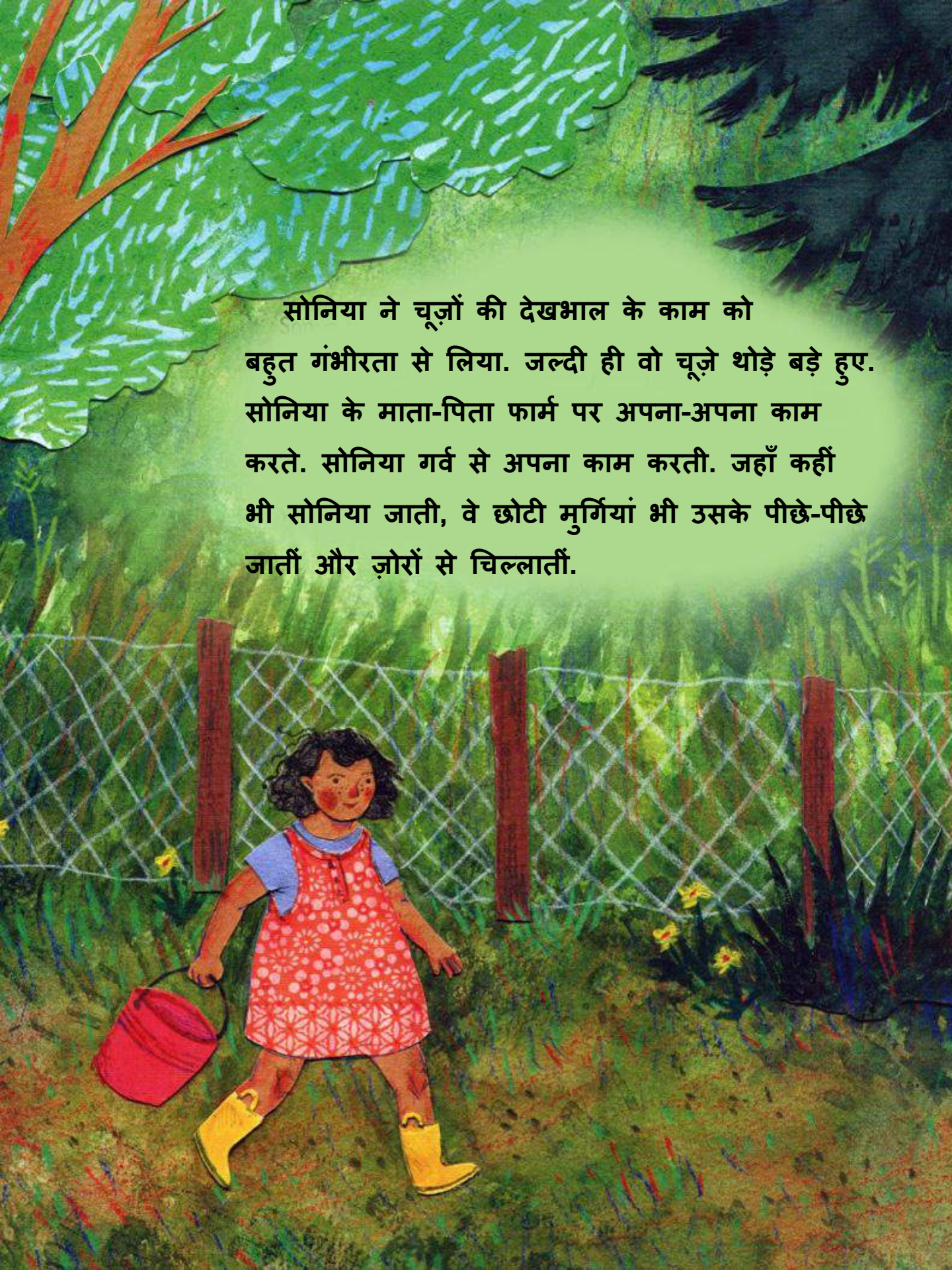

सोनिया ने चूज़ों की देखभाल के काम को बहुत गंभीरता से लिया. जल्दी ही वो चूज़े थोड़े बड़े हुए. सोनिया के माता-पिता फार्म पर अपना-अपना काम करते. सोनिया गर्व से अपना काम करती. जहाँ कहीं भी सोनिया जाती, वे छोटी मुर्गियां भी उसके पीछे-पीछे जातीं और ज़ोरों से चिल्लातीं.

सुबह-सुबह बूढ़े मुर्गे की बांग सुनकर सोनिया उठती. फिर वो तीनों मुर्गियों को दबड़े से बाहर निकालती जिससे कि वो बाहर जाकर अपना दाना चुग सकें और खेल सकें.

सोनिया उनके पीने के लिए एक बर्तन में ढेर सारा पानी रखती. वो उनके दबड़े को साफ़ करती और वहां पर नया पुआल बिछाती.

मुर्गियों के खाने के लिए वो ज़मीन पर टूटे मक्का के दाने बिखेरती. कभी-कभी मुर्गियां, सोनिया के हाथ से दाना चुगतीं. कभी-कभी मुर्गियां अपने लिए रसीले कीड़े खोज निकालतीं.

सोनिया की देखरेख में जल्दी ही तीनों चूज़े अच्छी मुर्गियां बनीं.

फिर एक सुबह, सोनिया को एक मुर्गी की पुआल के नीचे एक भूरा, चिकना अंडा मिला. उसने उस अंडे को अपने गाल से सहलाया और कहा, "बहुत शुक्रिया."

सोनिया उन मुर्गियों के लिए एक अच्छी माँ थी.

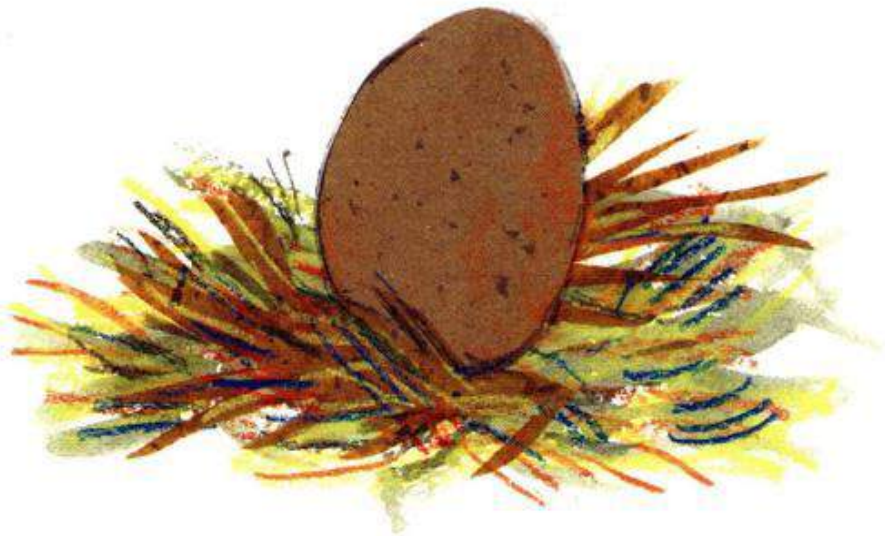

हर रात सोनिया सुनिश्चित करती कि तीनों मुर्गियां अपने दबड़े में सुरक्षित हों. कुछ देर शोर मचाने के बाद जब मुर्गियां सो जातीं तब सोनिया दबड़े का दरवाज़ा बंद करती. उसके बाद ही वो अपने घर वापिस जाती.

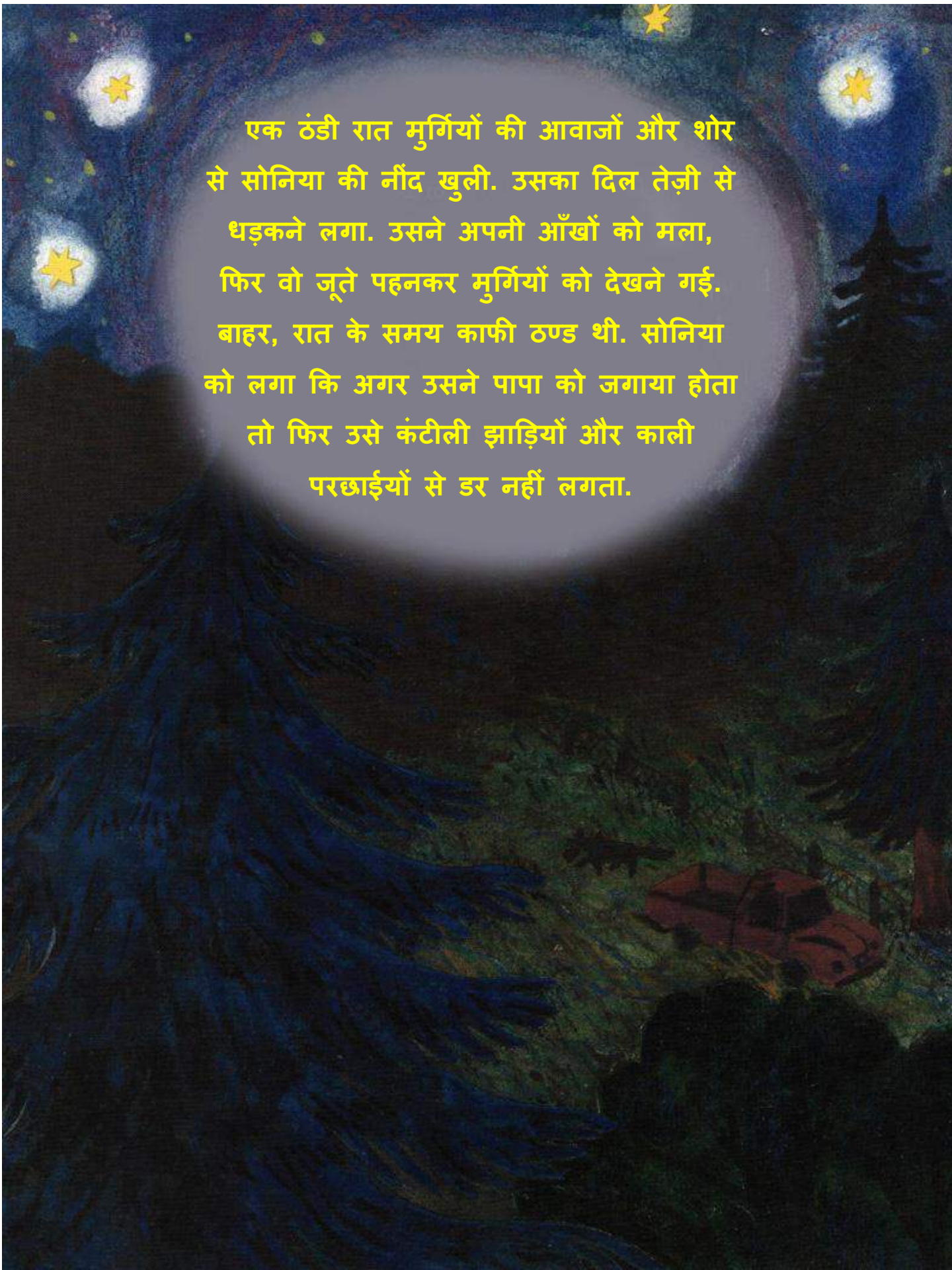

एक ठंडी रात मुर्गियों की आवाजों और शोर से सोनिया की नींद खुली. उसका दिल तेज़ी से धड़कने लगा. उसने अपनी आँखों को मला, फिर वो जूते पहनकर मुर्गियों को देखने गई. बाहर, रात के समय काफी ठण्ड थी. सोनिया को लगा कि अगर उसने पापा को जगाया होता तो फिर उसे कंटीली झाड़ियों और काली परछाईयों से डर नहीं लगता.

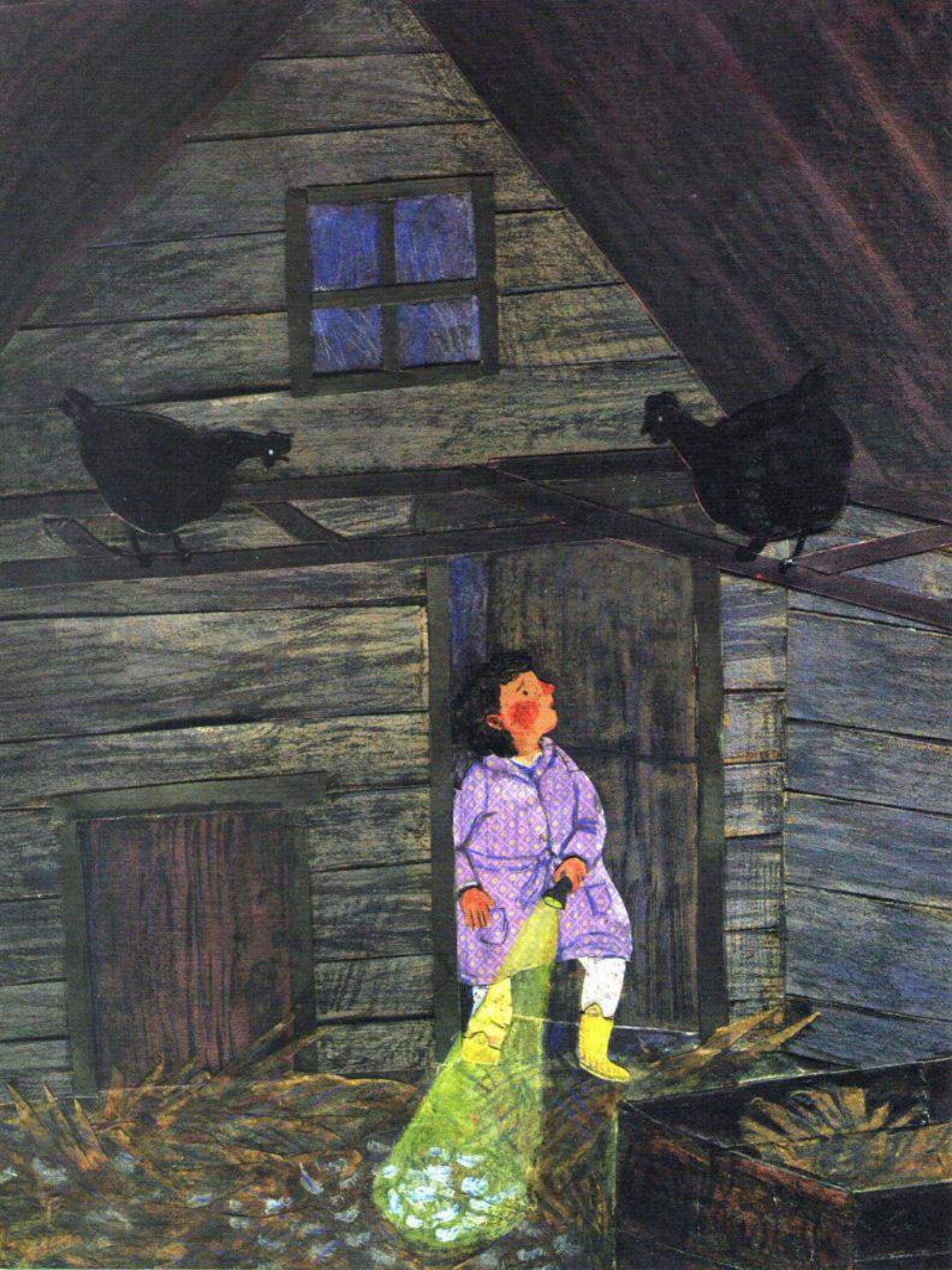

दबड़े में चारों ओर मुर्गी के पंख फैले थे. जब सोनिया को ऊपर की तांड पर सिर्फ दो घबराई हुए मुर्गियां बैठी दिखीं तो वो चिल्लाई. तीसरी मुर्गी गायब थी! यह देख सोनिया रोने लगी. तभी उसके पापा ने उसे अपनी बाहों में उठाया. उसके बाद वो पापा की दाढ़ी में रोने लगी.

सोनिया के पापा उसे घर में ले गए और उन्होंने उसे अपने गले से लगा कर रखा. जब सोनिया रोते-रोते थक गई तब उसने पिताजी से पूछा, “उसे कौन ले गया? लोमड़ी? क्या लोमड़ी ने उसे मार डाला? यह ठीक नहीं है!”

“चुप,” सोनिया के पापा ने कहा. “जो तुम्हें गलत लगता हो वो शायद लोमड़ी के लिए सही हो.”

फिर पापा ने सोनिया को एक कहानी सुनाई.

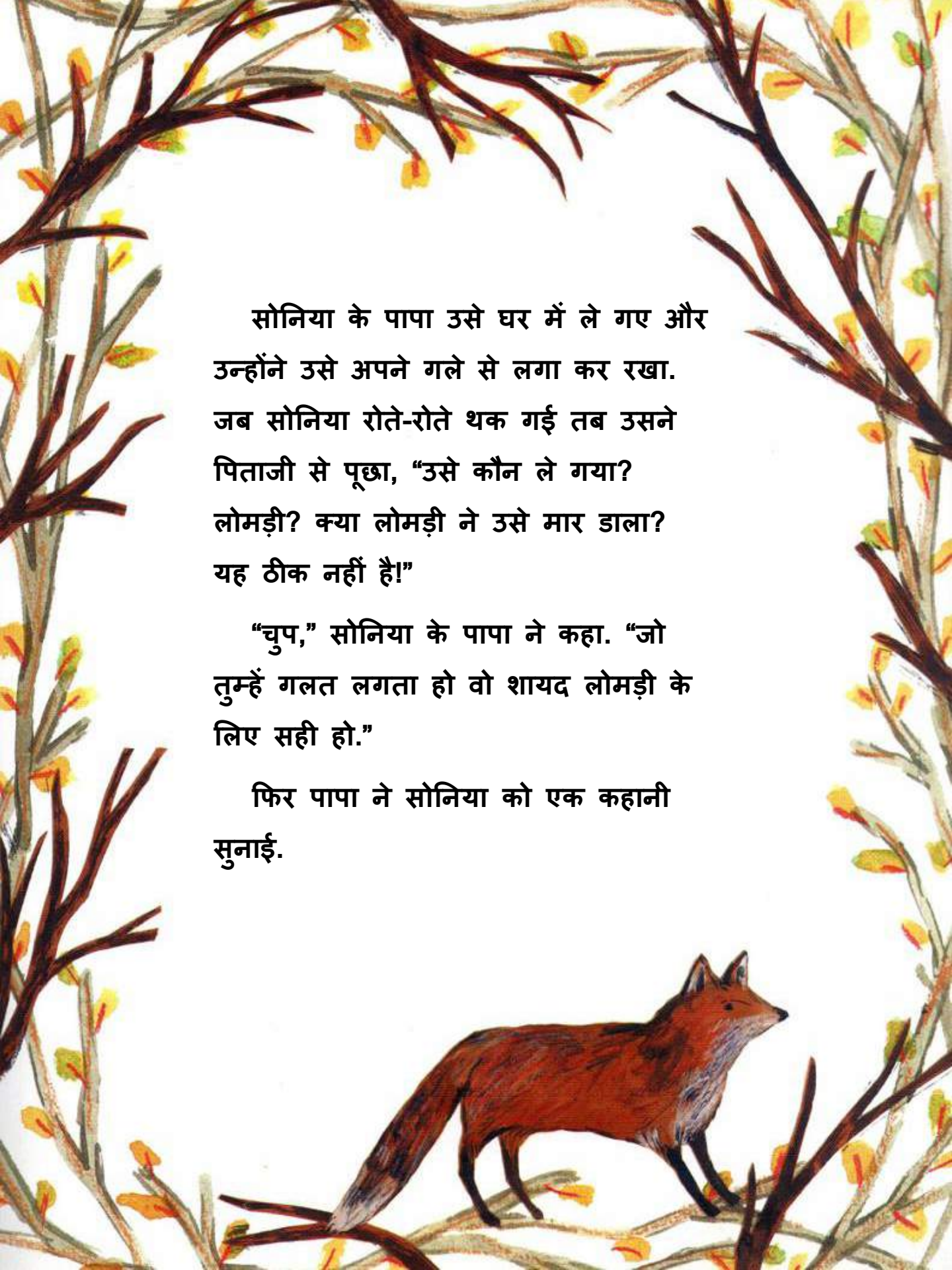

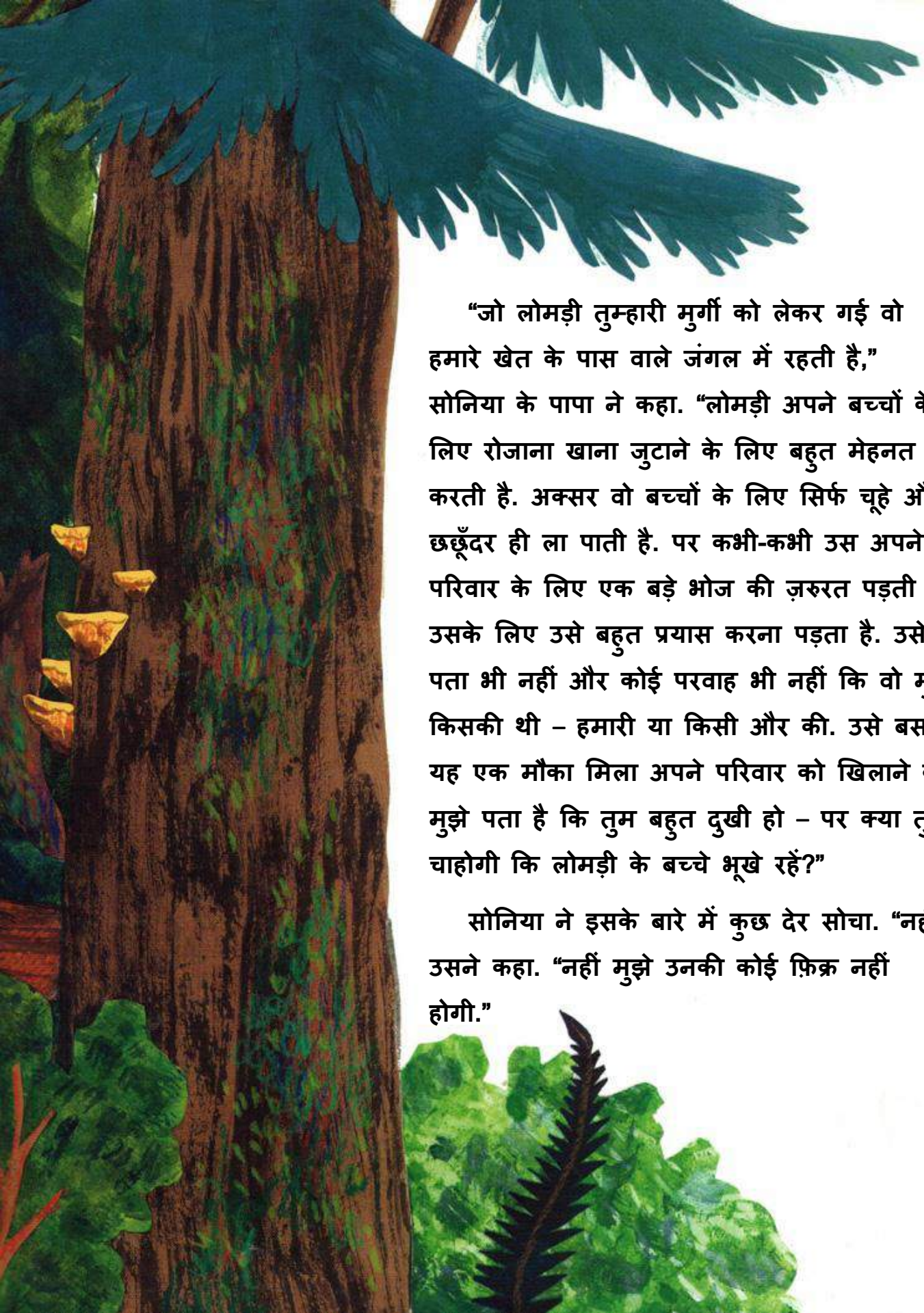

“जो लोमड़ी तुम्हारी मुर्गी को लेकर गई वो हमारे खेत के पास वाले जंगल में रहती है,” सोनिया के पापा ने कहा. “लोमड़ी अपने बच्चों के लिए रोजाना खाना जुटाने के लिए बहुत मेहनत करती है. अक्सर वो बच्चों के लिए सिर्फ चूहे और छछूँदर ही ला पाती है. पर कभी-कभी उस अपने परिवार के लिए एक बड़े भोज की ज़रुरत पड़ती है. उसके लिए उसे बहुत प्रयास करना पड़ता है. उसे पता भी नहीं और कोई परवाह भी नहीं कि वो मुर्गी किसकी थी – हमारी या किसी और की. उसे बस यह एक मौका मिला अपने परिवार को खिलाने का. मुझे पता है कि तुम बहुत दुखी हो – पर क्या तुम चाहोगी कि लोमड़ी के बच्चे भूखे रहें?”

सोनिया ने इसके बारे में कुछ देर सोचा. “नहीं,” उसने कहा. “नहीं मुझे उनकी कोई फ़िक्र नहीं होगी.”

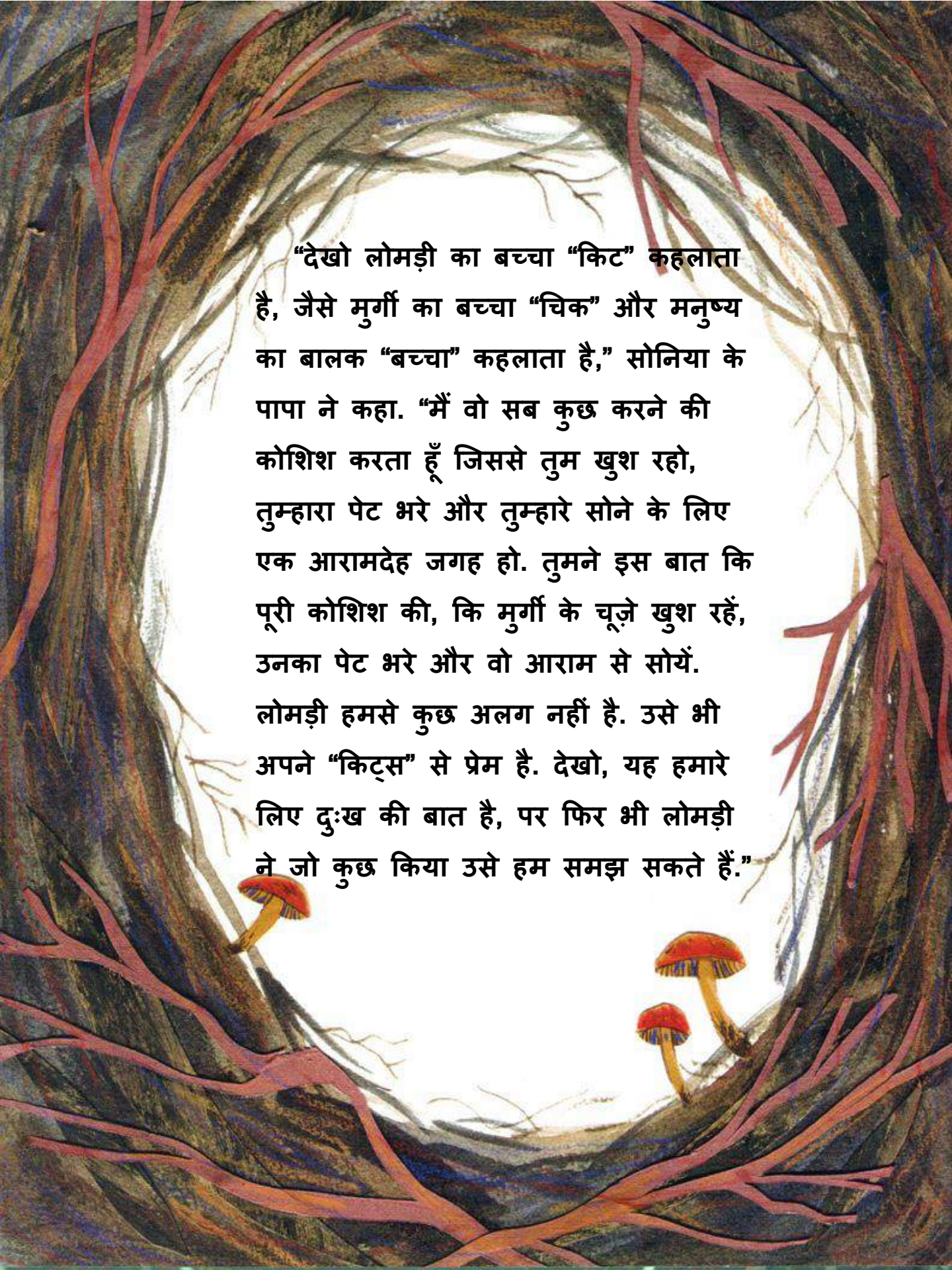

"देखो लोमड़ी का बच्चा "किट" कहलाता है, जैसे मुर्गी का बच्चा "चिक" और मनुष्य का बालक "बच्चा" कहलाता है," सोनिया के पापा ने कहा. "मैं वो सब कुछ करने की कोशिश करता हूँ जिससे तुम खुश रहो, तुम्हारा पेट भरे और तुम्हारे सोने के लिए एक आरामदेह जगह हो. तुमने इस बात कि पूरी कोशिश की, कि मुर्गी के चूज़े खुश रहें, उनका पेट भरे और वो आराम से सोयें. लोमड़ी हमसे कुछ अलग नहीं है. उसे भी अपने "किट्स" से प्रेम है. देखो, यह हमारे लिए दुःख की बात है, पर फिर भी लोमड़ी ने जो कुछ किया उसे हम समझ सकते हैं."

अगले दिन सोनिया ने अहाते के एक कोने में, अपनी मुर्गी की कब्र के लिए कुछ विशेष पत्थर लगाए. फिर सोनिया और उसके परिवार ने मुर्गी को याद किया जो बहुत रोंयेदार और मुलायम थी, जिसे रसीले कीड़े बहुत पसंद थे और जिसने सबसे पहले सबसे पहला भूरा अंडा सेया था.

"वो चिड़िया जो सबकी बहुत प्यारी थी," सोनिया की माँ ने उसे चूमते हुए कहा.

सोनिया का दिल बहुत भारी था. जहाँ एक तरफ उसे अपनी मुर्गी का गम था, वहां दूसरी ओर वो घने जंगल में रह रहे लोमड़ी के बच्चों के लिए ख़ुश भी थी.

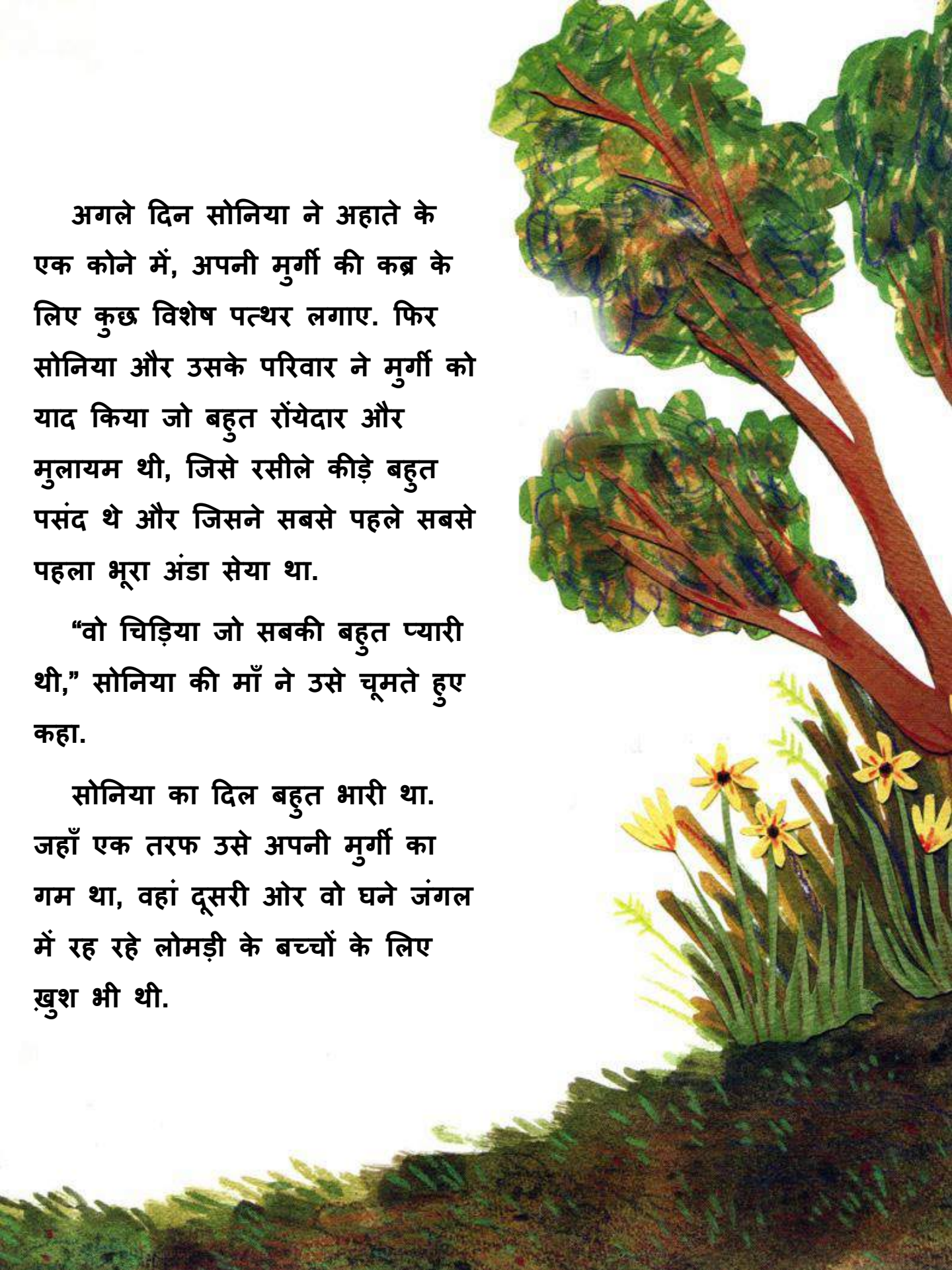

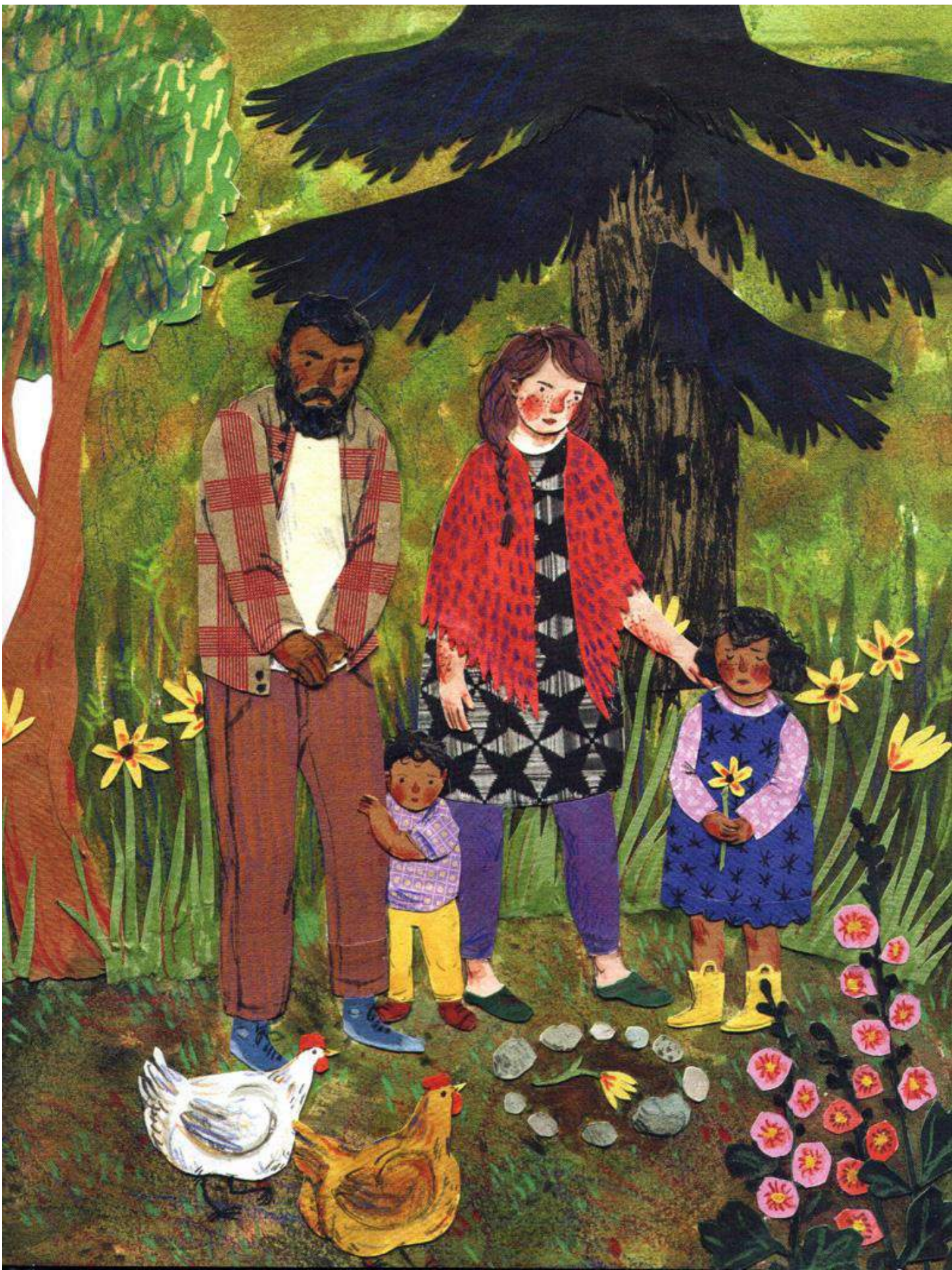

सोनिया और उसके परिवार ने मुर्गी के टूटे दबड़े की मरम्मत की. उन्होंने उस स्थान को ठीक किया जहाँ से लोमड़ी अन्दर घुसी थी. सोनिया अभी भी कुछ दुखी थी, पर उसने बाकी दो मुर्गियों की देखभाल ज़ारी रखी. उसने उनके लिए पर्याप्त मात्रा में पानी रखा. वो रोजाना उनके दबड़े को साफ़ करती और उन्हें बैठने को नई पुआल देती. सुबह-सुबह वो उनको मक्का के टूटे दानों का चुग्गा भी देती.

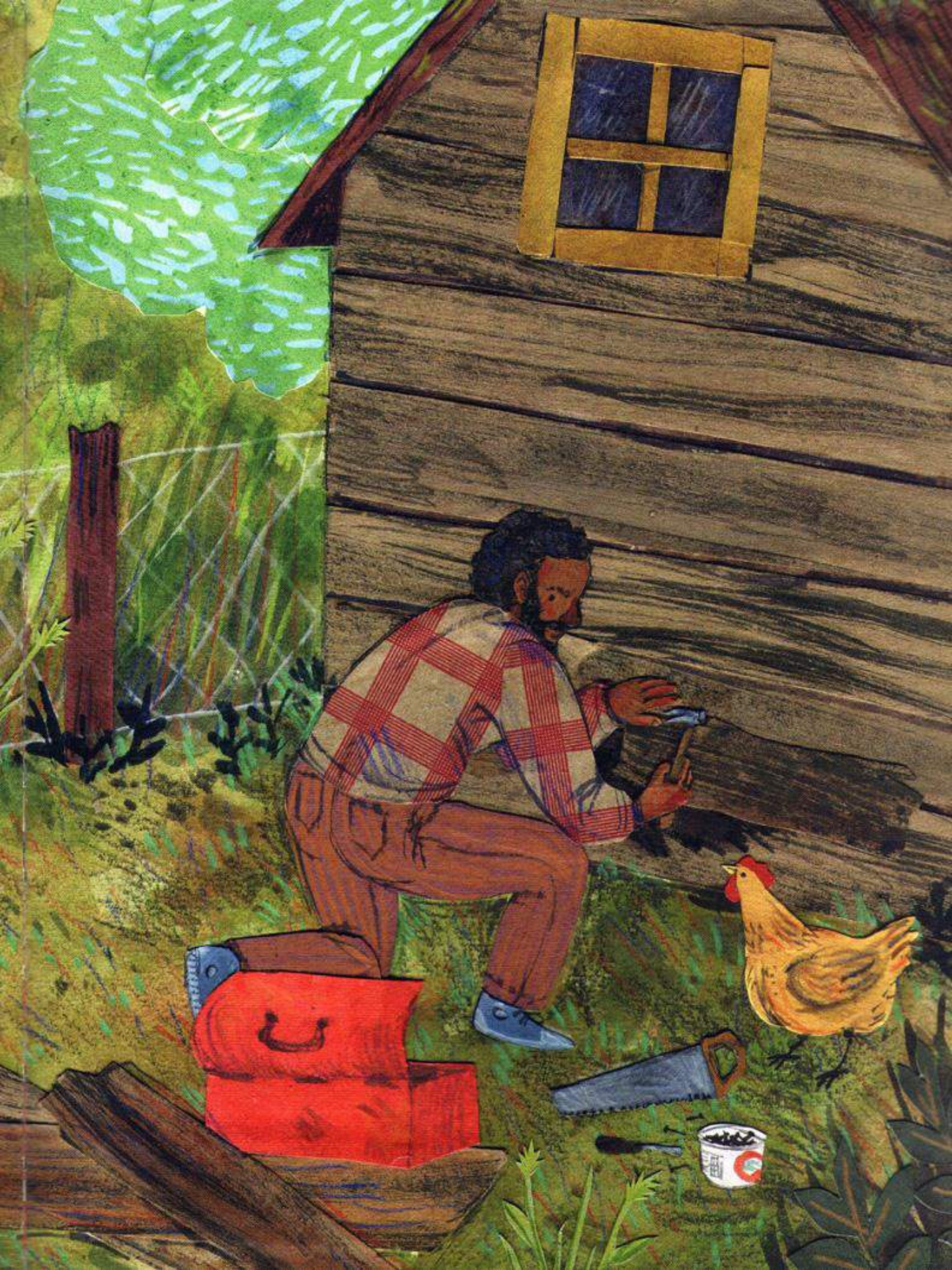

सोनिया को सबसे ख़ुशी उस दिन हुई जब
उनमें से एक भूरा अंडा ऊपर से चटखने लगा.

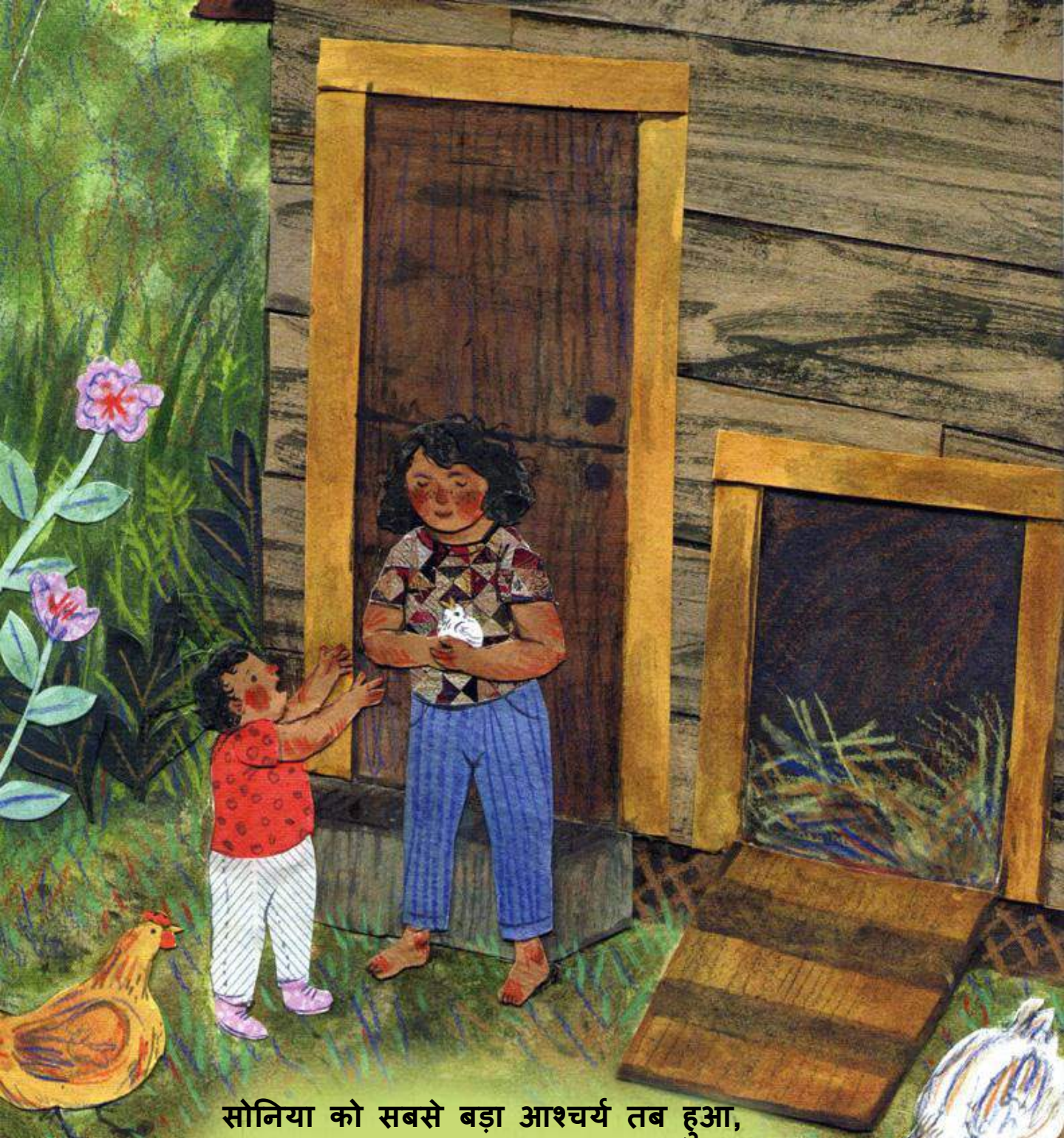

सोनिया को सबसे बड़ा आश्चर्य तब हुआ,
जब उस अंडे में से एक नया चूज़ा बाहर निकला.

"मैं तुम्हारी माँ हूँ," सोनिया ने कहा. "मैं वो सब कुछ करूंगी जिससे तुम खुश रहो – तुम्हारा पेट भरे, और तुम्हें सोने के लिए एक सुरक्षित जगह मिले."

और उसने वो किया भी.